श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 12, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार 18 अगस्त, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम अब हुआ शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रपति ने दी मंजूरी

नई दिल्ली, एजेंसियां। मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय करने पर राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने अपनी मंजूरी दे दी है। राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने इस बारे में केंद्रीय मंत्रिमंडल के फैसले पर मुहर लगाते हुए इसे अधिसूचित कर दिया है। इसके साथ ही अब आधिकारिक रूप से मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय हो गया है।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 29 जुलाई को नई शिक्षा नीति को मंजूरी दी थी। नई शिक्षा नीति के मसौदे में मंत्रालय का नाम बदलना भी एक महत्वपूर्ण बिंदू था। सोमवार की रात जारी अधिसूचना में बताया गया कि राष्ट्रपति ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय करने पर अपनी मुहर लगा दी है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व अध्यक्ष के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति ने पिछले साल मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक को नई शिक्षा नीति का मसौदा सौंपा था। मंत्रालय को इस मसौदे पर दो लाख से अधिक सुझाव मिले थे। नई शिक्षा नीति का विषय 2014 के लोकसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी के चुनावी घोषणा पत्र में शामिल था। इसका मसौदा तैयार करने वाले विशेषज्ञों ने पूर्व कैबिनेट सचिव टीएसआर सुब्रमण्यम के नेतृत्व वाली समिति की रिपोर्ट पर भी विचार किया था। उल्लेखनीय है इस मंत्रालय का नाम पूर्व में भी शिक्षा मंत्रालय था लेकिन 1985 में राजीव गांधी के कार्यकाल में इसका नाम बदलकर मानव संसाधन विकास (एचआरडी) मंत्रालय कर दिया गया था। राजीव मंत्रिमंडल में पीवी नरसिम्हा राव पहले एचआरडी मंत्री बनाए गए थे। इसरो के पूर्व चेयरमैन के. कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में नई शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करने वाले पैनल ने अपनी सिफारिशों में इस मंत्रालय का नाम बदलकर फिर शिक्षा मंत्रालय करने का सुझाव दिया था।

पंडित जसराज ने इस दुनिया को कहा अलविदा लोग बोले- एक युग का अंत

नई दिल्ली, जेएनएन। भारतीय शास्त्रीय संगीत की दुनिया को आज एक बड़ा झटका लगा है। शास्त्रीय संगीत के दिग्गज पंडित जसराज का निधन हो गया है। 90 साल की उम्र में पंडित जसराज ने इस दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया। पंडित का निधन अमेरिका के न्यू जर्सी में हुआ है। इस बात की जानकारी उनकी बेटी दुर्गा जसराज ने दी।

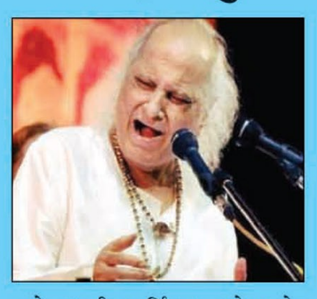

पंडित जसराज के निधन की खबर देते हुए उनकी बेटी दुर्गा जसराज ने बताया कि, 'बड़े दुख के साथ हमें यह सूचित करना पड़ रहा है कि संगीत मार्तंड पंडित जसराज ने अमेरिका के न्यू जर्सी में सुबह 5:15 बजे अपनी कार्डिअक अरेस्ट के चलते अंतिम सांसें लीं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान कृष्ण उनका स्वर्ग में प्यार से स्वागत करें जहां अब पंडित जी ओम नमो भगवते वासुदेवाय सिर्फ अपने प्यारे भगवान के लिए गाएंगे। हम प्रार्थना करते हैं कि उन पंडित जसराज, मेवाती घराने से ताल्लुक रखते थे। उन्होंने अपने पिता से म्यूज़िक सीखा था। 14 साल की उम्र से ही उन्होंने म्यूज़िक सीखने शुरू कर दिया था। जसरात दिन में करीब 14 घंटे रियाज किया करते थे। पंडित जसराज अपने जीवन काल में पद्म विभूषण, पद्म श्री संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, मारवाड़ संगीत रत्न पुरस्कार आदि सम्मानों से नवाजे जा चुके हैं। पंडित जसराज का जाना संगीत की दुनिया के लिए एक बड़ा खालीपन है। उनके निधन के बाद फैंस काफी भावुके हैं और इसे एक युग का अंत बता रहे हैं। देखें सोशल मीडिया पर फैंस कैसे दे रहे पंडित को श्रद्धांजलि।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने जताया विश्वास साल 2025 तक टीबी मुक्त होगा भारत

नई दिल्ली, एजेंसियां। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने सोमवार को विश्वास व्यक्त किया कि भारत साल 2025 तक टीबी (क्षयरोग) से मुक्त हो जाएगा। उन्होंने कहा कि इस बीमारी को जड़ से खत्म करने के लिए पिछले पांच साल के दौरान संसाधनों में चार गुना वृद्धि की गई है।

डॉ. हर्षवर्धन ने भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआइआइ) द्वारा आयोजित दो दिवसीय सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को वीडियो कांफ्रेंस के जरिए संबोधित करते हुए यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी ने हमें देश के स्वास्थ्य क्षेत्र के आधारभूत ढांचे को मजबूत करने का मौका दिया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत में सरकारी योजनाओं को जन आंदोलन बनाने की क्षमता है। चेचक और पोलियो के उन्मूलन में हम यह देख चुके हैं। पहले दुनिया के 60 फीसद पोलिया के मामले भारत में होते थे। आज देश पोलिया मुक्त हो गया है। इससे उन्हें भरोसा है कि प्रधानमंत्री ने भारत को 2025 तक भारत को टीबी मुक्त बनाने का जो लक्ष्य रखा है, उसे उद्योग जगत की मदद से हासिल कर लिया जाएगा। भारत में अभी करीब 26.4 लाख टीबी के मामले हैं। वहीं, दूसरी तरफ देश में कोरोना का संक्रमण दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। हर रोज संक्रमण के 50 हजार से ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं। हालांकि, इस दौरान संक्रमण से ठीक होने वालों की संख्या भी काफी रफ्तार से आगे बढ़ रही है। ताजा आंकड़ों के मुताबिक, देश में संक्रमितों की कुल संख्या 26 लाख से ज्यादा हो चुकी है जबकि कोरोना से ठीक होने वालों का आंकड़ा 19 लाख के ऊपर पहुंच गया है। इसके अलावा, 50 हजार से ज्यादा लोगों की मृत्यु कोरोना संक्रमण से हो चुकी है। फिलहाल देश में साढ़े छह लाख मरीजों का इलाज अस्पताल में चल रहा है। जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी के मुताबिक, भारत कोरोना से प्रभावित होने वाले देशों की लिस्ट में तीसरे नंबर पर पहुंच चुका है।

पश्चिम बंगाल में आपसी दंगल भाजपा के लिए मुसीबत प्रदेश के बड़े नेताओं में बनी हुई है प्रतिस्पर्धा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के दौरान पश्चिम बंगाल में मिली बड़ी जीत और विस्तार को शायद भाजपा का प्रदेश नेतृत्व संभाल नहीं पा रहा है। प्रदेश में विधानसभा चुनाव को अब एक साल का भी वक्त नहीं है लेकिन खींचतान चरम पर है। एकजुटता तो दूर, प्रदेश के बड़े नेताओं में एक दूसरे की डोर काटने की होड़ ज्यादा दिख रही है। ऐसे में केंद्रीय नेतृत्व की ओर से जल्द ही इसे थामने की कोशिश हो सकती है।

पश्चिम बंगाल भाजपा के मिशन कोरोमंडल में सबसे उपर है। बल्कि 2019 चुनाव के बाद केंद्रीय नेतृत्व से साफ निर्देश दिया गया था कि 2021 विधानसभा चुनाव में सरकार गठन का जज्बा होना चाहिए। तृणमूल की नब्ज समझने वाले मुकुल राय के जरिए जहां रणनीतिक दाव खेला जा रहा था। वहीं, खासकर जंगलमहल के ग्रामीण क्षेत्रों में पकड़ रखने वाले प्रदेश अध्यक्ष व सांसद दिलीप घोष के जरिए भाजपा विचारधारा को भी मजबूत करने की कोशिश हो रही थी।

पर हाल के दिनों में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा हावी होने लगी है। दरअसल तृणमूल में भी संगठन देखते रहे मुकुल संगठन और संसद में अपनी हिस्सेदारी चाहते हैं।

दिलीप घोष को पता है कि मुकुल की संगठन मे घुसपैठ उनके लिए खतरे की घंटी होगी। यही कारण है कि अपने प्रभाव से तृणमूल नेताओं को तोड़कर भाजपा में लाने की हाल की कोशिशों को भी धक्का लगा था। कुछ लोग भाजपा में शामिल होने के लिए आए तो थे लेकिन कुछ इंतजार के बाद वापस तृणमूल में लौट गए।

बताते हैं कि घोष रविवार को केंद्रीय भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा से मिलकर गए है। अंदरूनी राजनीति और भितरघात के जानकार लोगों के अनुसार इसी बीच एक खेमा ऐसा भी है जो कथित रूप से यह फैलाने की कोशिश में हैं कि भद्रलोक बंगाली के बीच घोष फिट नहीं बैठ रहे हैं। उनका फक्कड़पन, वेषभूषा भद्रलोक को नहीं भा रहा है। दरअसल हर खेमा अलग अलग तरह से आगामी चुनाव में अपना चेहरा आगे रखने की कोशिश कर रहा है और पार्टी की खींचतान सार्वजनिक हो रही है।

ध्यान रहे कि यह सब ऐसे वक्त मे हो रहा है जब प्रशासनिक स्तर पर ममता की नाकामी लोगों को नागवार गुजर रही है। ऐसे में पार्टी से अपेक्षा थी कि एकजुट होकर ममता के खिलाफ हल्ला बोलेगी लेकिन सूत्रों के अनुसार पर्दे के पीछे भाजपा नेताओं की जुबान पर ममता कम पार्टी के लोग ज्यादा होते हैं। बताया जा रहा है कि विधानसभा वार बैठकों के लिए प्रभारी महासचिव कैलाश विजयवर्गीय कोलकाता पहुंच गए हैं। लेकिन इन बैठकों में सीटों से ज्यादा नेताओं के आपसी व्यवहार और आचरण पर चर्चा हो सकती है।

'दृश्यम' के निर्देशक निशिकांत कामत का निधन

नई दिल्ली, जेएनएन। फिल्म 'दृश्यम' के निर्देशक निशिकांत कामत का निधन हो गया है। जिंदगी और मौत के बीच एक लंबी जंग लड़ने के बाद आखिरकार निशिकांत कामत जिंदगी की जंग हार गए। निशिकांत के निधन की जानकारी अभिनेता रितेश देशमुख ने अपने एक ट्व है। रितेश ने अपने ट्विटर हैंडल पर निशिकांत के साथ एक फोटो ट्वीट की जिसमें वो उन्हें लगे लगाते हुए नजर आ रहे हैं। फोटो के साथ एक्टर ने कैप्शन में लिखा, 'मैं तुम्हें मिस करूंगा मेरे दोस्त ज़िससे पहले जब निशिकांत के निधन की खबर आई तो रितेश ने ही इस बात की जानकारी दी थी कि निशिकांत ज़िदा हैं, रितेश ने ही ट्विटर पर निशिकांत की हालत नाजुक होने की जानकारी दी थी। रितेश ने ट्वीट करते हुए लिखा था, 'निशिकांत कामत

वेंटिलेटर सपोर्ट पर हैं। वो अभी जिंदा हैं और लगातार लड़ रहे हैं। उनके लिए दुआ करें'।आपको बता दें कि डायरेक्टर लिवर सिरोसिस नामक गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे। लंबे समय से वो हैदरबाद के एआईजी हॉस्पिटल में एडमिट थे।

फिल्ममेकर मिलाप जाफरी ने भी ट्वीट कर इस बात का जानकारी दी थी कि निशिकांत अभी जिंदा हैं। मिलाप ने लिखा, 'निशिकांत के साथ जो हॉस्पिटल में हैं मैंने तुरंत अभी उनसे बात की है। निशिकांत का निधन नहीं हुआ है। हां, लेकिन उनकी हालत नाजुक है। वो जिंदगी और मौत से लड़ रहे हैं,लेकिन जिंदा हैं'। कुछ दिन पहले हॉस्पिटल ने भी स्टेटमेंट जारी कर उनकी तबीयत के बारे में बताया था। हॉस्पिटल की तरफ से जारी किए गए स्टेटमेंट में कहा गया था, 'निशिकांत की हालत नाजुक है। हालांकि, उनकी हालत स्थिर है। स्टेटमेंट में कहा गया था कि पीलिया और पेट से जुड़ी एक बीमारी की शिकायत के बाद निशिकांत को हैदराबाद के एआईजी हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया। जहां टेस्ट करने पर पता चला कि उन्हें लिवर सिरोसिस नामक गंभीर बीमारी है और साथ ही कुछ इन्फेक्शन्स हैं। जिसके बाद डायरेक्टर को आईसीयू में एडमिट कर दिया गया'। आपको बता दें कि निशिकांत कई बॉलीवुड फिल्मों का डायरेक्शन कर चुके हैं, जिनमें अजय देवगन, तब्बू की दृश्यम, इरफान खान की मदारी, मंबई मेरी जान भी शामिल है। निशिकांत ने कुछ फिल्मों में एक्टिंग में भी हाथ आजमाया है। वो फिल्म रॉकी हैंडसम में नेगेटिव किरदार में नजर आए थे। इसके अलावा निशिकांत कई मराठी फिल्मों में भी नजर आ चुके हैं। मराठी फिल्म 'डोंबिवली फास्ट' से फिल्मी डेब्यू करने वाले कामत ने 2008 में बॉलिवुड में एंट्री की और साल 2006 में हुए मुंबई बम विस्फोट पर बेस्ड फिल्म 'मुंबई मेरी जान' बनाई। अगर उनके अपकमिंग प्रोजेक्ट्स के बारे में बात करें तो अभी निशिकांत 'दरबदर' नाम की फिल्म पर काम कर रहे हैं, जिसकी 2022 में रिलीज होने की उम्मीद जताई जा रही है।

आइसीएमआर ने कहा, कोरोना टेस्ट का कुल आंकड़ा तीन करोड़ के पार

नई दिल्ली, जेएनएन। कोरोना वायरस संक्रमण का पता लगाने के लिए जांच का आंकड़ा सोमवार को तीन करोड़ को पार कर गया। इनमें से एक करोड़ परीक्षण पिछले दो हफ्ते के दौरान ही किए गए हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि प्रयोगशालाओं की बढ़ती संख्या और सुगमता से जांच की सुविधा के चलते यह महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हो सकी है। इस बीच, कुल संक्रमितों का आंकड़ा भी 26.50 लाख के करीब पहुंच गया है और मृतकों की संख्या 50 हजार को पार कर गई है।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) ने कहा है कि 16 अगस्त तक कुल तीन करोड़ 41 हजार 400 नमूनों की जांच की जा चुकी थी। रविवार को सात लाख 31 हजार 697 नमूनों की जांच हुई। भारत में छह जुलाई तक एक करोड़ और दो अगस्त तक दो करोड़ नमूनों की जांच हुई थी। इस साल जनवरी के शुरू में इस महामारी के सामने आने के बाद भारत में इसकी जांच की सुविधा सिर्फ पुणे स्थिति राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान में थी। आज 1,470 प्रयोगशालाओं में कोरोना वायरस की जांच की जा रही है। प्रति 10 लाख आबादी पर अब 21,769 जांच हो रही है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि ज्यादा और समय पर जांच होने से लोगों के पॉजिटिव पाए जाने की दर के साथ ही कोरोना से मृत्युदर भी गिरी है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से सोमवार सुबह आठ बजे जारी आंकड़ों के मुताबिक बीते 24 घंटे के दौरान 57,981 नए मामले सामने आए और 941 लोगों की मौत हो गई। इसके साथ ही अब तक 26 लाख 47 हजार 663 संक्रमित मिल चुके हैं और 50,921 लोगों की जान भी जा चुकी है। इस दौरान रिकॉर्ड 57,584 मरीज ठीक भी हुए हैं और अब तक स्वस्थ हुए लोगों की संख्या 19 लाख 19 हजार 842 हो गई है। मरीजों के स्वस्थ होने की दर भी बढ़कर 72.51 फीसद हो गई है। सक्रिय मामले छह लाख 76 हजार 900 रह गए हैं। 941 मौतों में सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में 288, तमिलनाडु में 125, कर्नाटक में 116, आंध्र प्रदेश में 88, उत्तर प्रदेश में 56, बंगाल में 51, पंजाब में 41, गुजरात में 20, झारखंड में 16 मौतें शामिल हैं।

छत्तीसगढ़ : हवाई यात्रियों को जल्द मिलेगी लखनऊ अहमदाबाद और भुवनेश्वर विमान की सौगात

रायपुर, जेएनएन। छत्तीसगढ़ के हवाई यात्रियों को 25 अगस्त से अहमदाबाद, लखनऊ और भुवनेश्वर विमान की सौगात मिलने वाली है। विमान हफ्ते में तीन दिन यानी मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को उड़ान भरेंगे। स्वामी विवेकानंद विमानतल प्रबंधन ने इन उड़ानों के लिए समय भी तय कर दिया है, जो 24 अक्टूबर तक रहेगा। अब रायपुर से दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरू, हैदराबाद के साथ ही इन तीन शहरों के लिए भी उड़ान शुरू हो जाएगी। इनकी बुकिंग भी शुरू कर दी गई है। लखनऊ उड़ान इससे पहले 2019 में शुरू हुई थी, लेकिन कंपनी द्वारा कुछ दिन चलाने के बाद इसे बंद कर दिया गया। इसी तरह अहमदाबाद उड़ान की भी मांग काफी समय से की जा रही थी। अहमदाबाद उड़ान पिछले साल अप्रैल में ही शुरू होनी थी, लेकिन किसी कारण से इसे शुरू नहीं किया जा सका। इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट क्रमांक 6ई163 अहमदाबाद से सुबह 8.30 बजे उड़ान भरेगी और रायपुर सुबह 10.25 बजे रायपुर पहुंचेगी। इसके बाद फ्लाइट क्रमांक 6ई163 रायपुर से भुवनेश्वर के लिए 11.25 बजे उड़ान भरेगी और 12.35 बजे भुवनेश्वर पहुंचेगी। फ्लाइट क्रमांक 6ई 164 भुवनेश्वर से 1.15 बजे रायपुर के लिए उड़ान भरेगी और रायपुर 2.25 बजे पहुंचेगी। इसके बाद फ्लाइट क्रमां 6ई 164 3.25 बजे रायपुर से अहमदाबाद के लिए उड़ान भरेगी और शाम 5.20 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी। इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट क्रमांक 6ई6133 शाम चार बजे लखनऊ से उड़ान भरेगी और 5.35 बजे रायपुर पहुंचेगी। इसके बाद फ्लाइट क्रमांक 6ई6231 शाम 6.15 बजे रायपुर से उड़ान भरेगी और 7.50 बजे लखनऊ पहुंचेगी।

आदिवासियों की कर्जमाफी के लिए नया कानून लाएगी मप्र की सरकार, मसौदा तैयार

भोपाल, स्टेट ब्यूरो। शिवराज सरकार प्रदेश में आदिवासियों को साहूकारों के चंगुल से बचाने के लिए मध्य प्रदेश अनुसूचित जनजाति ऋण विमुक्ति विधेयक-2020 लाएगी। इसके तहत 15 अगस्त 2020 तक 89 अधिसूचित क्षेत्रों में अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति को गैर लाइसेंसी साहूकार से लिया कर्ज नहीं चुकाना होगा। अब साहूकार कर्ज अदायगी के लिए दबाव भी नहीं बना सकेंगे। यदि कर्ज के बदले में कोई वस्तु या दस्तावेज गिरवी रखे गए हैं तो उन्हें भी वापस लौटाना होगा। राजस्व विभाग ने विधेयक का मसौदा तैयार कर लिया है, जिसे सितंबर में प्रस्तावित किए जा रहे विधानसभा के सत्र में प्रस्तुत किया जाएगा।

सूत्रों के मुताबिक प्रदेश सरकार साहूकारी व्यवस्था में बदलाव को लेकर कदम उठा रही है। इसमें साहूकारी अधिनियम में संशोधन के साथ अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति को कर्जमाफी देने के लिए नया कानून बनाया जा रहा है। केंद्र सरकार से इसको लेकर हरी झंडी मिल चुकी है। दरअसल, अधिसूचित क्षेत्र में कोई भी प्रक्रियागत बदलाव करने से पहले केंद्र सरकार की अनुमति लेना जरूरी होता है। शिवराज सरकार ने इसके लिए प्रस्ताव भेजा था, जिसे अनुमति मिल गई है। वहीं, साहूकारी अधिनियम में संशोधन को लेकर भी प्रक्रिया अंतिम

चरण में है।

विभागीय अधिकारियों ने बताया कि ऋण विमुक्ति विधेयक राज्य के 89 आदिवासी बहुल विकासखंड में लागू होगा। यहां अनुसूचित जनजाति वर्ग के व्यक्ति द्वारा गैर लाइसेंसी साहूकार से 15 अगस्त 2020 तक लिया गया कर्ज नहीं चुकाना होगा। ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादातर इसी तरह ऊंची ब्याज दर पर कर्ज मिलता है। इसके बदले में व्यक्ति जेवर, जमीन या अन्य वस्तु गिरवी रखता है। कर्ज न चुकाने पर ब्याज बढ़ता जाता है। बताया जा रहा है कि साहूकारी अधिनियम में संशोधन से जुड़े जो सुझाव केंद्र सरकार ने दिए थे, उन्हें पूरा कर प्रस्ताव भेज दिया गया है, जिस पर जल्द ही औपचारिक अनुमति मिलने की संभावना है।

उधर, कांग्रेस नेता विवेक तन्खा ने साहूकारी कर्ज को शून्य करने के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के एलान पर ट्वीट कर कहा कि साहूकारी कर्ज शून्य करने का आदेश बहुत आसान निर्णय हैं। जनता को बोझ समझना सरकारों का अधिकार है। न्याय प्रिय हैं तो सरकारी और सहकारी कर्ज को माफ कीजिए। असली राहत तो तब होगी। जरा सोचिए, यह कोरोना काल है। भाजपा सरकार ने हमेशा आदिवासियों के हितों का संरक्षण किया है। आदिवासियों और गरीबों को साहूकारों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए अभियान चलाया जाएगा। नियमों के विपरीत दिया गया कर्ज शून्य होगा। इसके लिए विधेयक लाया जाएगा। इसकी तैयारी अंतिम चरण में है- गोविंद सिंह राजपूत, राजस्व मंत्री, मप्र।

छत्तीसगढ़ : सामुदायिक वन संसाधन का हक मिलने के बाद ग्रामीणों ने पहली बार

अंबिकापुर, जागरण संवाददाता। सामुदायिक वन संसाधन के अधिकार के लिए लंबे संघर्ष के बाद नौ अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस पर मिली अधिकार की सौगात के बाद पहली बार छत्तीसगढ़ के सरगुजा में ग्रामीणों ने 15 अगस्त के मौके पर जंगल में झंडा फहराया। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर बतौली ब्लॉक के ग्राम करदना, लुंड्रा ब्लॉक के ग्राम बिल्हमा के ग्रामीणों ने सामुदायिक वन संसाधन के हक का अधिकार पत्र पाने की खुशी में एकजुट हुए और बीच जंगल में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

विदित हो कि विश्व आदिवासी दिवस पर लखनपुर ब्लॉक के ग्राम लोसगा, रेम्हला, सकरिया, सेलरा,

जामा, तिरकेला, करई, उदयपुर ब्लॉक के ग्राम बनकेसमा और बुले तथा बतौली ब्लॉक के ग्राम करदना को 5993.455 हेक्टेयर जंगल का सामुदायिक वन संसाधनों के लिए हक का अधिकार पत्र मिला। अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम 2006 के तहत वन क्षेत्र में निवास करने वाले समुदाय को उनके काबिज वन भूमि के व्यक्तिगत वन अधिकार के साथ गांव को उनके जंगल की रूढ़िजन्य सीमा के भीतर का सामुदायिक वन अधिकार दिया जाना था, जिसके तहत छत्तीसगढ़ में 2008 से वनाधिकार कानून का क्रियान्वयन चालू हुआ और व्यक्तिगत वन अधिकार मान्य किए गए परंतु सामुदायिक वन अधिकार एवं वन संसाधनों के लिए हक के अधिकार पर काम नहीं हुआ था।

चौपाल ग्रामीण विकास प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान द्वारा वर्ष 2010 से छत्तीसगढ़ में सामुदायिक वन अधिकार को लेकर काम प्रारम्भ किया गया। वन विभाग के पुरजोर विरोध के बावजूद सामुदायिक दबाव के कारण सितंबर 2013 में सरगुजा के 38 गांव को केवल निस्तार, जलाऊ लकड़ी, चरागाह और वनोपज संकलन का सामुदायिक वन अधिकार पत्र वितरण किया था, जिसमें वन विभाग द्वारा अनावश्यक शर्त लगाया गया। सामुदायिक वन संसाधनों के लिए हक का अधिकार पत्र नहीं दिया गया था। सामुदायिक वन अधिकार पत्र में लगाए गए अनावश्यक शर्त को हटाने एवं वन संसाधनों के लिए हक का अधिकार की मांग को लेकर वर्ष 2013 से सरगुजा में समुदाय द्वारा संघर्ष जारी था, इसके लिए समुदाय द्वारा समय-समय पर जिला कलेक्टर, आदिवासी आयुक्त, विधायक तथा सांसद सरगुजा को ज्ञापन भी दिया गया। 23 अगस्त 2018 से तीन सितंबर 2018 तक समुदाय के द्वारा उपरोक्त मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल किया गया, जिसे जिला प्रशासन द्वारा बलपूर्वक हटाया गया। उपरोक्त संघर्ष के लिए समुदाय को मार्गदर्शन व डाक्यूमेंटेशन में चौपाल संस्थान की अहम भूमिका रही। छत्तीसगढ़ वन अधिकार मंच, पहाड़ी कोरवा महा पंचायत, आदिवासी अधिकार समिति के साझा प्रयास के फलस्वरूप 9 अगस्त को सरगुजा के 10 गांव को सामुदायिक वन संसाधनों के लिए हक का अधिकार मिलना संभव हो पाया।

सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने तीन उच्च न्यायालयों में जजों की नियुक्ति और प्रोन्नति को दी मंजूरी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली। इलाहाबाद हाईकोर्ट में नए न्यायाधीश के रूप में संजय कुमार पचौरी, सुभाष चंद्र शर्मा, सुभाष चंद और सरोज यादव पदासीन होंगे। सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने इसे मंजूरी दे दी है। इसके अलावा कोलीजियम ने गुजरात हाईकोर्ट में तीन वकीलों व केरल हाईकोर्ट में दो वकीलों व दो न्यायिक अधिकारियों को हाईकोर्ट न्यायाधीश बनाने का प्रस्ताव मंजूर कर लिया है। सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने गत 14 अगस्त को हुई बैठक में तीन उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की प्रोन्नति और नियुक्ति के प्रस्तावों पर विचार के बाद मंजूरी दे दी। कोलीजियम ने उत्तर प्रदेश में न्यायिक अधिकारी संजय कुमार पचौरी, सुभाष चंद्र शर्मा, सुभाष चंद और श्रीमती सरोज यादव को हाईकोर्ट का न्यायाधीश प्रोन्नत करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। उसी दिन सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने गुजरात हाईकोर्ट में न्यायाधीशों की नियुक्ति के प्रस्ताव पर भी विचार किया और बैठक में विचार विमर्श के बाद कोलीजियम ने तीन वकीलों वैभवी देवांग नानावती, निर्झर कुमार सुशील कुमार देसाई और निखिल श्रीधरन करील को गुजरात उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त करने की मंजूरी दे दी। कोलीजियम ने केरल हाईकोर्ट में दो न्यायिक अधिकारियों करुणाकरन बाबू और कौसर इदाप्पागढ को हाईकोर्ट में न्यायाधीश नियुक्त करने का भी प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज मंगलवार, 18 अगस्त, 2020

संक्षेप समाचार

गाय को धारदार हथियारों से मार डाला गया, दो को घायल कर दिया गया

मऊआइमा। धान के खेत में छुटटा गाय चली जाने पर एक गाय को धारदार हथियारों से मार डाला गया जबकि दो गायों को घायल कर दिया गया है । पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश में जुट गई है । मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सरायख्वाजा में तीन आवारा पशुओं द्वारा सददू के खेत में धान खाने लगीं। बताया गया है कि सददू तथा एक अन्य ने गायों पर धारदार हथियारों से मार कर एक गाय की हत्या कर दी । जबकि दो को जख्मी कर दिया गया । सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल गायों का उपचार करा रही है जबकि मृतक गाय का पोस्टमार्टम पशु डाक्टर से करा रही है । गांव के सोनू पाल की तहरीर पर पुलिस ने सददू तथा एक अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश में जुट गई है ।

पागल हाथी ने ले ली वृद्ध की जान

उतरांव। क्षेत्र की सदरेपुर सराय इस्माइल गांव में एक पागल बेकाबू हाथी ने 1 वृद्ध को अपना निशाना बना लिया। वही 70 वर्षीय वृद्ध की एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई।पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए भेज दिया। सदरेपुर सराय इस्माइल गांव निवासी पन्नालाल हरिजन उम्र 65 वर्ष जो राजगीरी का काम कर अपने परिवार का भरण पोषण करता था। रविवार दोपहर लगभग 2:00 बजे गांव में एक पागल हाथी रास्ते से जा रहे पन्नालाल हाथी के संपर्क में आ गया। हाथी ने अपने सूंड में लपेटकर वृद्ध को जमीन पर कई बार पटकने लगा। वही वृद्ध गंभीर रूप से घायल हो गया किसी तरीके ग्रामीणों ने जान बचाकर वृद्ध को इलाज के लिए भर्ती कराया जहां इलाज के दौरान मौत हो गई। वही सूचना पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। हाथी को अपने कब्जे में लेने के लिए सूचना पर पहुंचे उपजिलाधिकारी व वन विभाग के अधिकारियों समेत उतरांव थानाध्यक्ष चंद्र भूषण मौर्य अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंच गए। जहां हाथी पर काबू पाने के लिए कई शिकंजे अपनाने लगे। फिर हाल खबर लिखे जाने तक हाथी को कब्जे में नहीं लिया जा सका। पुलिस प्रशासन व वन विभाग के अधिकारी लगातार हाथी को अपने कब्जे में लेने के लिए काफी मशक्कत कर रहे हैं। पागल हाथी से गांव में दहशत का माहौल ब्याप्त है। वही महावत के मनाने पर भी हाथी मानने को तैयार नही है।

पागल हांथी

शुआट्स कुलपति एवं यीशु दरबार चर्च के बिशप को बदनाम करने की साजिश

प्रागराज। शुआट्स के मीडिया प्रभारी एवं प्रवक्ता डा. रमाकान्त दूबे ने बयान जारी करके कहा कि श्याम प्रकाश द्विवेदी द्वारा अपनी राजनीति चमकाने के लिए तथा शासन से गनर प्राप्त करने के उद्देश्य से शासन-प्रशासन को गुमराह किया जा रहा है एवं शुआट्स कुलपति तथा यीशु दरबार चर्च के बिशप प्रो. आर.बी. लाल को षड्यन्त्र के तहत बदनाम करने व झूठे मुकदमें में फंसाने की साजिश रची जा रही है। डा. दूबे ने कहा कि श्याम प्रकाश द्विवेदी लगातार अपने अधिकारिक फेसबुक एकाउन्ट पर यीशु दरबार एवं इसके बिशप प्रो. आर.बी. लाल के खिलाफ झूठे आरोप लगाता आ रहा है लेकिन कोई आरोप आज तक सिद्ध नहीं हुआ। थक हारकर इसने एक सुनियोजित साजिश के तहत जार्ज टाउन थाने में शुआट्स कुलपति के खिलाफ झूठी एफआई दर्ज कराई है जबकि इस कथित घटना से शुआट्स कुलपति एवं बिशप का दूर-दूर तक कोई नाता नहीं है जो जाँच में सामने भी आ जायेगा। विश्वविद्यालय में प्रवेश शुरू हो गया है इसलिए अनैतिक प्रवेश के लिए दबाव बनाने के लिए एवं ब्लैकमेलिंग के उद्देश्य से श्याम प्रकाश द्विवेदी ने यह झूठी एफआईआर दर्ज कराई है। प्रशासन से अपील है कि विश्वविद्यालय एवं यीशु दरबार चर्च की छवि धूमिल करने वाले तथा गन्दी राजनीति करने वालों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जानी चाहिये जिससे कानून का पालन करने वाले लोग शान्ति के साथ रह सकें।

पुलिस की मौजूदगी में वृद्ध का हुआ अंतिम संस्कार

करछना। क्षेत्र के गंधिवांव के मजरा मदार्पुर में बीते शनिवार दो पक्षों में हुए जमीनी विवाद में कई लोग घायल हो गये थे जिसमें गंभीर रूप से घायल दिनेश चन्द्र पाण्डेय की रविवार को जिला अस्पताल में मौत हो गयी थी। जिसके बाद परिजन बिना पोस्टमार्टम के ही शव को घर लेकर चले आये थे। सूचना मिलने पर आनन.फानन में पुलिस मृतक के घर पहुंची और घंटों मशक्कत के बाद परिजनों को किसी तरह समझा.बुझाकर शव को रविवार देर शाम पोस्टमार्टम के लिए भेजा। सोमवार को दोपहर बाद पुलिस ने पोस्टमार्टम कराकर शव को परिजनों को सौंप दिया था। शव घर पहुंचने ही कोहराम मच गया और परिजनों को रो.रोकर बुरा हाल रहा। पुलिस द्वारा आरोपियों के जल्द से जल्द गिरफ्तार कर जेल भेजने के आश्वासन के बाद परिजन शव के अंतिम संस्कार के लिए राजी हु?। किसी प्रकार के बवाल व उपद्रव की संभावना को देखते हुए एतिहातन पुलिस बल गांव में तैनात रही और सीओ करछना आशुतोष त्रिपाठी की मौजूदगी में परिजनों ने मृतक दिनेश चन्द्र पाण्डेय का डीहा गंगा घाट पर अंतिम संस्कार कर दिया। पुलिस ने नामजद लोगो में कुछ लोगो को थाने लाकर पूंछताछ में जुटी है।

बेगारी नहीं करने पर प्रताड़ित किए जा रहे दर्जनभर आदिवासी परिवार

शंकरगढ़। शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के टिकरौहीं कला गांव के कुछ दबंगों ने एक युवक की पिटाई कर दी, जिससे नाराज होकर सोमवार को दर्जनों आदिवासी परिवार के लोगों ने शंकरगढ़ थाने का घेराव कर दिया।आदिम समाज ने भी इस मामले में कड़ी चेतावनी दी है। इस पूरे प्रकरण में थाने के एक दरोगा पर भी इल्जाम लगाया गया है। हालांकि क्षेत्राधिकारी बारा ने कहा कि आदिवासी मजदूरों के साथ न्याय किया जाएगा,वहीं दरोगा के मामले में विभागीय जांच और कार्रवाई की बात कही है।

काबिलेगौर है कि क्षेत्र के ग्राम सभा टिकरौहीं कला के कुछ आदिवासी मजदूरों ने साल भर पहले गांव के ही एक काश्तकार के यहां मजदूरी की थी। मजदूरों का आरोप है कि काम करने के बाद इनको मजदूरी नहीं दी गई थी। इस बार भी धान की रोपाई के समय यही लोग पुनः मजदूरी के लिए बुलाने आए जिस पर मजदूरों ने मेहनताना ना मिलने की बात कहते हुए जाने से इंकार कर दिया। आरोपित है कि इससे नाराज दबंगों ने एक आदिवासी युवक की पिटाई कर दी और धमकी भी दी। आदिवासी परिवार का आरोप है कि जब वह लोग शिकायत लेकर थाने पहुंचे तो कार्रवाई नहीं की गई। बार-बार थाना जाने से नाराज एक दरोगा ने भी दबंगों का पक्ष लेते हुए शिकायतकर्ता को धमकाया और शांत नहीं बैठने पर टांग तोड़ने की धमकी दे डाली। इससे आदिवासी समाज के लोग आक्रोशित हो उठे और सोमवार को दर्जनों की संख्या में शंकरगढ़ थाने का घेराव कर दिया और कहा जब तक दरोगा के ऊपर कार्यवाही नहीं होती, तब तक वह शांत नहीं बैठेंगे। इस मामले की जानकारी मिलने पर आदिम समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हंसराज कोल और महासचिव शेर सिंह भी थाना पहुंचे और कार्यवाई की मांग को लेकर करीब 4 घंटे तक थाने पर बैठे रहे। दूसरी तरफ मामला बढ़ने की सूचना पर उपजिलाधिकारी बारा गौरव रंजन श्रीवास्तव और क्षेत्राधिकारी बारा आर पी दोहरे पीपीजीसीएल चौकी प्रभारी रामप्रवेश यादव थाना पहुंचे और आदिवासी समाज के लोगों को शांत कराया।फिलहाल खबर लिखे जाने तक पुलिस ने मारपीट मामले में दो के खिलाफ एससी-एसटी समेत अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। वहीं राष्ट्रीय अध्यक्ष हंसराज कोल ने कहा है कि अगर एक सप्ताह के अंदर दरोगा के ऊपर कार्रवाई नहीं होती वे लोग जिले में भी प्रदर्शन करेंगे।

साल भर से मेहनताना ने मिलने से थाने का घेराव करते आदिवासी समाज के लोग

अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल का किया गया गठन

जसरा। व्यापारी समाज जातियों का समूह ना हो करके सभी जातियों का एक समूह है` व्यापारी वर्ग जहां देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करते हैं वहीं पर सरकार को भी व्यापारियों की समस्याओं को हल करने के लिए व्यापार आयोग का गठन करना चाहिए` व्यापारी समाज केवल व्यापार नहीं देश और समाज के लिए भी हमेशा सबसे आगे की पंक्ति में खड़ा रहता है` उक्त बातें अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के जसरा के बैठक में यमुनापार जिलाध्यक्ष चंद्र प्रकाश केसरी ने नई कार्यकारिणी के गठन और शपथ ग्रहण में उपस्थित व्यापारियों को संबोधित करते हुए कही।

नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते लोग

श्री चंद्र प्रकाश केसरी ने जसरा बाजार में नवगठित उद्योग व्यापार मंडल के पदाधिकारियों को पद की शपथ दिलाते हुए कहा कि व्यापारी समाज देश की आर्थिक नीतियों की सबसे मजबूत कड़ी है` सरकार द्वारा जब भी कोई नीतियों की घोषणा की जाती है उसमें अक्सर व्यापारियों के हित को अनदेखी किया जाता है` उन्होंने यह भी बताया कि कोरोना काल में प्रवासी मजदूर तथा गांव गांव में गरीबों के घर राहत सामग्री पहुंचाने का जिस अच्छे ढंग से कार्य किया है उसके लिए पूरा व्यापारी समाज बधाई का पात्र है। उन्होंने यह भी बताया कि हर संकट के समय व्यापारी देश और समाज हित में अपने अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए हमेशा आगे खड़ा मिलता है` कार्यक्रम का संचालन करते हुए शंकरलाल केसरवानी मधुकर ने बताया कि आज इस व्यापार मंडल की गठन में सबसे ज्यादा जिम्मेदारी युवाओं ने अपने कंधों पर लिया है ` आज हम लोगों को युवा वर्ग से ही एक नई आशा और उम्मीद दिखाई पड़ रही है` कार्यक्रम की अध्यक्षता चेयरमैन श्याम कृष्ण उर्फ पप्पू यादव ने किया।

इस मौके पर मुख्य रूप से शम्भू नाथ खरे, अध्यक्ष रमेश चंद केसरी, महामंत्री प्रमोद कुमार डंडा, मोनू मिश्र सभासद, राजाबाबू, विनोद कुमार मुन्ना, रतन केसरवानी, राजमणि पटेल, दुर्गा प्रसाद एडवोकेट, मोहनलाल केसरवानी, डॉ० अरुण कुमार, शत्रुघ्न लाल केसरवानी बाबा, ओम प्रकाश बच्चा, परमानंद जायसवाल, शंकर लाल गुप्ता पूर्व प्रधान, कैलाश केसरवानी आदि सैकड़ों लोग मुख्य रूप से मौजूद रहे।

मामूली बात को लेकर दो पक्षों में मार पीट, क्रास केस दर्ज

मऊआइमा । मामूली बात को लेकर दो पक्षों में जमकर मार पीट तोड फोड लूट पाट हुई। पुलिस ने दोनों ओर से डेढ सौ लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर किया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम कलुआपुर निवासी राकेश सरोज पुत्र ,श्री राम का आरोप है कि मामूली बात पर पडोसी गांव के दूसरे सामुदाय के लोगों से कहा सुनी हो जाने पर उक्त सामुदाय के सैकडों लोग एकत्रित हो कर हमला बोल दिए और जाति सूचक गालियां देते हुए मुझे तथा मेरा बीच बचाव करने आए लोगों को मार पीट कर जख्मी कर पांच सौ रुपये और मोबाइल छिन कर बदतमीजी किए । राकेश कुमार सरोज ने ग्राम जमखुरी निवासी पुन्नू ,अच्छू ,इम्तियाज ,इमरान को नामजद करते हुए डेढ सौ अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है । उधर ग्राम जमखुरी निवासी मोहम्मद आलम पुत्र जमील उद्दीन का आरोप है कि वह अपने खेत था तभी हाथों में लाठी डंडा फरसा और तमंचा आदि लेकर उनपर हमला बोल कर मार पीट कर बेहोश कर दिया गया तथा बीच बचाव में आए आधा दर्जन को मार पीट कर घायल कर दिया गया । मोहम्मद आलम ने मऊआइमा थाने में महेन्द्र ,धीरज तथा 30 अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है । दो सामुदायों के बीच मार पीट और तनाव को देखते हुए कई थानों की फोर्स एंव सीओ सोरांव मौके पर पहुंच कर हालात को काबू किए । फिलहाल गांव में पुलिस की गश्त बढा दी गई है ।

पंचायत भवन निर्माण मे मनमानी

सैदाबाद। क्षेत्र के खेरूआ नेवादा गांव ग्राम प्रधान के घर के पास पंचायत भवन बनाने के लिए जमीन चिन्हित कर ली गई है। जिसका बिरोध ग्रामीण कर रहे है। मामले से संबधित प्रार्थनापत्र खंड विकास अधिकारी को दे दिया गया है। गांव के अरूण कुमार की अगुवाई मे राहुल कुमार,विजय कुमार,रघुवीर ,अजय कुमार,नन्हेलाल प्रजापित आदि ने बताया कि ग्राम प्रधान आरती देवी मनमाने तरीके से अपने घर के पास निज हित मे पंचायत भवन का निर्माण कराना चाह रही है। ग्राम प्रधान का घर गांव के अंतिम छोर पर है। जहां आने जाने मे भी दिक्कत होगी। शिकायतकर्ताओ ने खंडविकास अधिकारी को प्रार्थनापत्र देकर समस्या के निस्तारण की मांग की है।

किसानों पर लदे मुकदमें वापस लिए जाएं

करछना। बीते कई वर्षो से सुखिंयों में रहे कचरी.देवरी पावर प्लांट के मामले में कचरी के कई किसानों पर मुकदमा भी दर्ज हुआ था। रविवार को किसान नौजवान मोर्चा के लोगों ने कचरी में बैठक कर बिजली पावर प्लांट भूमि अधिग्रहण व आंदोलन के दौरान किसानों पर दर्ज किए गए मुकदमे को वापस लेने की मांग की। मोर्चा के अध्यक्ष विजेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि किसानों को अपने जायज मांगों से हटाने और उनके अधिकारों का हनन करने के लिए काफी दिनों तक उन्हे मुकदमें में फंसाकर हताश और निराश किया गया। मोर्चे के लोगों ने कहा कि कई जगह किसानों की जमीने अधिग्रहीत कर होने के बाद भी उन्हे कई तरह के मुकदमों से जूझना पड़ रहा है इसके लिए मोर्चा सरकार से गुहार लगाएगा कि मुकदमें वापस कर किसानों का सम्मान करना जरूरी है। इस दौरान किसान नेता राजबहादुर पटेलए पवन मिश्राए जगत बहादुर पटेलए दिनेश तिवारीए हरीश चंद्र मिश्रए रामदुलार भारतीयए अगम लाल पटेल सहित कई किसान मौजूद रहे।

बारिश की वजह से रास्तें हुए कीचड़युक्त

करमा । पिछले दो दिनों की बारिश में ही करमा सहित आसपास के कई गाँवों के मुख्य एवम लिंक मार्ग नरकीय स्थिति में पहुँच गये हैं जहाँ से आवागमन करना टेढ़ी खीर साबित हों रहा हैं । क्षेत्र के सेमरी तालुका पुरवा सहित बनपुरवा आदि गाँवों का रास्ता कीचड़युक्त एवम जलभराव के कारण जानलेवा साबित हों रहें हैं । सेमरी तालुका के विभिन्न रास्तों का भी यही हाल हैं जो स्थानीय लोगों के आवागमन में बहुत बड़ी समस्या बन रहें हैं बताया जाता हैं कि उक्त ग्रामसभा को तत्कालीन सांसद श्यामाचरण गुप्ता जी नें अपने कार्यकाल में गोद लिए थे फिर भी गाँव का समग्र विकास न होना चिंता का विषय हैं ।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई के पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन अर्पित

प्रयागराज। झूसी योजना नंबर 3 आवास विकास कॉलोनी स्थित बनकटा आवास पर पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न से सम्मानित स्वर्गीय.अटल बिहारी वाजपेई की पुण्यतिथि पर वरिष्ठ समाजसेवी व भाजपा नेता संजय मिश्र बनकटा ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की ' इस अवसर पर अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अश्वनी द्विवेदी (जिला अध्यक्ष भाजपा गंगापार) सहित भाजपा कार्यकर्ता शामिल रहे ' सोशल डिस्टेंसिंग का ख्याल रखते हैं सभी कार्यकताओं ने बारी-बारी से अपने पूर्व चहेते प्रधानमंत्री श्रद्धा अटल बिहारी वाजपेई जी के चित्र पर पुष्प अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन पण्डित जीत लाल त्रिपाठी(जिला महामंत्री भाजपा) तथा अध्यक्षता दिलीप निषाद (मण्डल अध्यक्ष झूसी) ने किया।

श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों में अमरनाथ त्रिपाठी जी (पूर्व जिला अध्यक्ष) अनिरुद्ध सिंह पटेल जिला उपाध्यक्ष भाजपा गंगापार) ,विमलेश पटेल (जिला संयोजक युवा मोर्चा), कुँवर मृगेंद्र सिंह जी (जिला कार्यसमिति सदस्य),रोहित केशरी जी (जिला मंत्री भाजपा गंगापार),प्रभा पाण्डेय, प्रमोद जायसवाल,बृजेश त्रिपाठी, लवकुश पंडित,अशोक पाण्डेय, आत्मा धर दुबे कपिल सिंह पटेलअमित मिश्र इत्यादि लोग शामिल रहे। यह कार्यक्रम वरिष्ठ समाजसेवी भाजपा नेता संजय मिश्र बनकटा के सौजन्य से संपन्न हुआ।

हैंडपंप पर पानी भरने गई महिला को पीटा

करछना। थाना क्षेत्र के चन्दौली गांव मे सोमवार सुबह हैडपंप पर पानी भर रही एक महिला को पुरानी खुन्नस को लेकर पडोसी गाली दे रहा था मना करने पर उसे मारने पीटने लगा। गांव निवासी अनारकली 65 को पडोसी ननकऊ पटेल मारने पीटने लगा बीच बचाव करने आये महिला के बेटे शिव कुमार पटेल व उसकी बहू मनीषा को भी परिवार के अन्य लोगो के साथ मिलकर लाठी डंडे से मारपीट कर लहूलुहान कर दिया। पुलिस ने महिला की तहरीर पर मामला दर्ज करते हुए घायलो का उपचार सीएचसी करछना मे कराया।

आवास के नाम पर प्रधान ने की पैसे की मांग, बीडीओ से की शिकायत

करछना। विकास खण्ड करछना के अन्तर्गत आवास और शौचालय के नाम पर प्रधान पात्र लाभार्थियों से धनउगाही का काम करते है। जबकि इस पैसे का प्रधान से लेकर ग्राम सचिव से लेकर अन्य अधिकारियों के बीच बंदरबांट होती है। प्रधान को सुविधा शुल्क न दे पाने की स्थिति में उनको स्वीकृति शौचालयए आवास को निरस्त कराने की धमकी देते है। इसी क्रम में विकास खण्ड के ग्राम पंचायत कैथी के दिनेश कुमार भारतीयाए नन्दलाल भारतीया ने प्रधान को आरोपित करते हुए बीडीओ करछना से शिकायत की है कि प्रधान आवास के नाम पर पांच हजार रुपए और शौचालय के नाम पर दो हजार रुपए धनवसूली के लिए दबाव बना रहे हैए न देने की स्थिति में उसका आवास सूची से निरस्त कराने की धमकी दी जा रही है। इसी तरह और गांवों में आवासए शौचालयए मनरेगा के नाम पर धनउगाही का खुल्ला खेल चल रहा है। मामला जिम्मेदार अधिकारियों के संज्ञान में होने के बावजूद भी कोई कार्यवाही नही होती है जिससे बहुत से गांवों में गरीबों को आवास और शौचालय से वंचित होना पड़ रहा है। भुक्तभोगी ने सम्बन्धित उच्चाधिकारियों को मामले का निराकरण कराने की मांग की है।

प्रदेश सरकार झूठ जातिवाद का भेदभाव कर रही है : विकास

करछना। प्रयागराज के करछना विधानसभा के सारंगापुर ग्राम सभा में राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी पी के तत्वाधान में भागीदारी संकल्प मोर्चा द्वारा आयोजित नुक्कड़ चौपाल का आयोजन किया गया जिसमें पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव एवं पूर्व सदस्य पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम डॉक्टर महेश चंद्रा प्रजापति एवं पार्टी का एक एक पदाधिकारी काली पट्टी बांधकर सरकार की जनविरोधी नीतियों लूट बलात्कार हत्या बेरोजगारी भ्रष्टाचार बढ़ती हुई महंगाई बीपी शर्मा आयोग का सख्त विरोध आदि के खिलाफ सरकार का विरोध प्रदर्शन किया प्रजापति ने बीजेपी भारतीय झूठ पार्टी की नीतियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश के प्रधानमंत्री जी ने 1 साल में दो करोड़ लोगों को रोजगार देने का वादा किया था लेकिन एक साल में चार करोड़ लोगों को बेरोजगार करने का कार्य किया कोरोना के नाम पर पुलिसिया तांडव द्वारा जबरदस्ती चालान और उत्पीड़न करने का कार्य योगी सरकार कर रही है बीपी शर्मा आयोग ने पिछड़ी जाति को क्रीमी लेयर और नॉन क्रीमी लेयर के नाम पर लड़ाने का कार्य कर रही है क्रीमी लेयर में जिस प्रकार से क्लास वन से क्लास फोर्थ तक के सरकारी कर्मचारियों को और कृषि से प्राप्त आय को शामिल किया गया है इस का सख्त विरोध भागीदारी संकल्प मोर्चा कर रहा है उत्तर प्रदेश में यदि शराब नहीं बंद किया गया तो धारा 144 के खत्म होते ही एक विशाल जन आंदोलन किया जाएगा पार्टी की विचारधारा से प्रभावित होकर दर्जनों की संख्या में लोगों ने पार्टी की सदस्यता एवं पदाधिकारी बने सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत बधाई इस आशा और विश्वास के साथ कि संगठन की विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने का कार्य करेंगे,राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी पी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विकास सिंह पटेल में नुक्कड़ चौपाल को संबोधित करते हुए कहा कि बीजेपी भारतीय झूठ पार्टी जाति की राजनीति करती है प्रदेश के मुख्यमंत्री ठाकुर समाज से आते हैं जिससे वह एक जाति को बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं बीजेपी देश की पहली ऐसी पार्टी है जो जाति के नाम पर टिकट देती है जाति के नाम पर मंत्री बनाते हैं जाति के नाम पर मुआवजा देते हैं जाति के नाम पर ट्रांसफर पोस्टिंग करते हैं सबसे बड़ा अगर जातिवाद किसी पार्टी में है तो उस पार्टी का नाम बीजेपी भारतीय झूठ पार्टी है साथ ही पिछड़ों का वोट लेने का कार्य बीजेपी करती है लेकिन हिस्सेदारी के सवाल को लेकर भागीदारी देने का कार्य नहीं करती है शराबबंदी के सवाल को लेकर कोई लड़ने का कार्य कर रहा है तो वह पार्टी राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी पी एवं भागीदारी संकल्प मोर्चा है भागीदारी संकल्प मोर्चा चाहता है कि प्राथमिक स्तर में तकनीकी शिक्षा लागू किया जाए और प्राथमिक स्तर से लेकर परास्नातक तक मुफ्त शिक्षा दी जाए पूर्व मंत्री श्री ओमप्रकाश राजभर जी के नेतृत्व में जो भागीदारी संकल्प मोर्चा बनाया गया है जिसमें अभी तक 12 पार्टियां शामिल हो चुकी है भाजपा को उत्तर प्रदेश और केंद्र से मुक्त करने के लिए यह एक बड़ा विकल्प बनकर उभरा है नुक्कड़ चौपाल में सुनील कुमार चमार हिमांशु सिंह संजय कुमार गौतम रोशन लाल प्रजापति निखिल गौतम आज पदाधिकारी गण उपस्थित रहे।

चौपाल में उपस्थित लोगो को संबोधित करते विकास निगम

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

धोनी में व्यक्तित्व एवं अनुशासन भी रहाः विवेक

प्रयागराज। विराट स्पोर्टस क्लब के निदेशक विवेक बाजपेयी ने सोमवार को कहा कि भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी क्रिकेट के जितने शानदार खिलाड़ी रहे, उतना ही वह दूसरे खिलाड़ियों के लिये प्रेरक थे। उनमें व्यक्तित्व और अनुशासन कूट कूट कर भरा है। श्री बाजपेयी ने कहा कि मैच की जीत को अंतिम रूप देने की विशेषता और टीम के प्रत्येक खिलाड़ी से उसका सर्वश्रेष्ठ खेल निकलवा कर उसे टीम इंडिया की जीत में बदलने की विशेष योग्यता के कारण जब स्वतंत्रता दिवस की संध्या को इस खिलाड़ी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की तो क्रिकेट प्रेमियों के साथ साथ सम्पूर्ण देश के लोगों के चेहरे मुरझा गए। सभी को उम्मीद थी कि धोनी अभी टी ट्वेंटी विश्व कप तक टीम इंडिया से जुड़े रहेंगे। लेकिन क्रिकेट मैच की तरह ही जीत के लिए सही निर्णय लेने वाले इस सफलतम क्रिकेट कप्तान ने टीम इंडिया के स्वर्णिम भविष्य के लिए सही दिन और सही समय चुना।

हाईकोर्ट ने दो पहिया वाहन पर दो सवारी की सशर्त अनुमति दी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कोविड-19 की गाइडलाइन का कागजों में ही पालन करने पर गहरी नाराजगी जाहिर की है। इसको लेकर दाखिल अवमानना याचिका पर जिलाधिकारी व एस एस पी प्रयागराज के खिलाफ अवमानना का केस दर्ज कर मंगलवार को स्पष्टीकरण मांगा है।

कोर्ट ने अपने पिछले आदेश को संशोधित करते हुए दो पहिया वाहन पर दो लोगो के बैठने की अनुमति देने का सशर्त निर्देश दिया है और कहा है कि हेलमेट, फेस कवर व मास्क पहनना अनिवार्य होगा। अभी तक कोर्ट ने केवल पति पत्नी को ही साथ मे दो पहिया वाहन पर दो सवारी की अनुमति दी थी। साथ ही कहा है कि ई-रिक्शा व आटो रिक्शा मे 4 लोगो से अधिक लोग न बैठे।

कोर्ट ने अपूर्व देव के मास्क को आवश्यक वस्तुओं की तरह उपलब्ध कराने की मांग में भेजे गये पत्र को जनहित याचिका के रूप में कायम करने का आदेश देते हुए भारत सरकार व राज्य सरकार से जवाब तलब किया है।

ए एस जी आई शशि प्रकाश सिंह ने कहा कि कोविड 19 जांच मशीन आयी है किन्तु कमरा तय न हो पाने के कारण उसे लगाया नही जा सका है। इस पर कोर्ट ने चुटकी ली कि छोटा सा मामला किन्तु केन्द्र सरकार को मशीन लगाने के लिए कमरा नही मिल पा रहा है।

यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा तथा न्यायमूर्ति अजित कुमार की खंडपीठ ने क्वारेन्टाइन सेन्टरो की दुर्दशा व अस्पतालों में इलाज की बेहतर सुविधाओं को लेकर कायम जनहित याचिका पर दिया है ।

प्रयागराज के सी एम ओ ने हलफनामा दाखिल किया।कोर्ट ने उनसे कोरोना जांच व रिपोर्ट देने का व्योरा मांगा था। रिपोर्ट आने मे देरी को लेकर कोर्ट ने यह आदेश दिया था।

याचिका की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने कहा कि लाक डाउन लागू हुए 5 माह बीत चुके हैं और सरकार अभी भी गाइडलाइन तैयार करने मे जुटी है। जब कि मौके पर गाइडलाइन का पालन करने की जरूरत है।

अधिवक्ता राम कौशिक व प्रियंका मिड्ढा ने कोर्ट के आदेश की अवहेलना करने की शिकायत की। कोर्ट ने अवमानना याचिका कायम करने का आदेश दिया और कहा कि इन्होंने जो फोटोग्राफ पेश किये उसे देखने से लगता है कि सारे रोडमैप, प्लान के प्रयास कागजों में किये जा रहे है।

आदेश की अवहेलना पर डी एम व एस एस पी प्रयागराज के खिलाफ अवमानना केस दर्ज, कोर्ट ने मांगा स्पष्टीकरण

मास्क आवश्यक वस्तु घोषित करने पर केन्द्र व राज्य सरकार से जवाब तलब

कोर्ट ने हाई रिस्क ग्रुप के 75 वर्षीय गर्ग

के कोर्ट में आने पर सुरक्षा ढील पर नाराजगी व्यक्त की और कहा कि वकील या वादकारी के धमकाने से सुरक्षा नियमो में ढील न दी जाय। हाईकोर्ट परिसर में प्रवेश के नियमों का कड़ाई से पालन किया जाय।मामले की सुनवाई 18अगस्त को भी होगी ।

75 वर्षीय अधिवक्ता एस के गर्ग ने अधिकारियों को सडक पर निकलकर गाइडलाइन के पालन का जायजा लेने के निर्देश दिये जाने की मांग की। अपर महाधिवक्ता मनीष गोयल ने कहा कि अधिकारी बाहर जा रहे हैं । सरकार पेन्डेमिक की रोकथाम के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। कार्यवाही रिपोर्ट दाखिल करने के लिए एक सप्ताह का समय मांगा।

प्रयागराज में पेड़ में लटकता मिला सफाईकर्मी का शव

प्रयागराज। जार्जटाउन थाना क्षेत्र में जगत तारन डिग्री कालेज के समीप स्थित एक अर्धनिर्मित माकान परिसर में एक पेड़ से सफाई कर्मी का शव सोमवार शाम लटकता हुआ पाया गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। आशंका जताई जा रही है कि उसकी हत्या की गई है। पुलिस इसे आत्महत्या का मामला मान रही है। शहर के कीटगंज थाना क्षेत्र के इन्द्रपुरी कालोनी बैरहना निवासी गोपाल जी (55वर्ष) पुत्र ननकू लाल परिवार के भरण-पोषण के लिए सफाई का काम करता था। बताया जा रहा है सोमवार की सुबह घर से निकला और वापस घर नहीं लौटा। सोमवार की शाम जगतारन डिग्री कालेज के समीप एक अर्धनिर्मित माकान परिसर में मौजूद एक पेड़ में उसका शव स्थानीय लोगों ने देखा तो पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर उसकी पहचान कराने का प्रयास किया। कुछ ही देर में उसकी पहचान हो गई। उधर खबर मिलते ही उसके परिवार के लोग भी मौके पर पहुंचे और उसकी पहचान किया। वहीं दूसरी तरफ आशंका जताई जा रही है कि उसकी हत्या की गई है। पुलिस कहना है कि शव पेड़ से लटकता मिला है। प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का लग रहा है। उसकी मौत का अस्पष्ट कारण पोस्टमार्टम के बाद ज्ञात हो पाएगा। अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि सोमवार की शाम एक अधेड़ का शव पाया गया। शव कब्जे में लेकर जांच की जा रही है।

टेवा ने चयनित शिक्षकों को नियुक्ति ना मिलने पर जतायी नाराजगी

प्रयागराज। प्रयागराज में कई शिक्षकों का चयन बोर्ड से चयन होने के पश्चात विद्यालयों में नियुक्ति नहीं हो पा रही है। क्योंकि शासन की मंशा के विपरीत कालेजों ने सांठ गांठ करके अधियाचित पदों पर स्थानांतरण के माध्यम से पदों को भर लिया है। इसी को लेकर अटेवा पेंशन बचाओ मंच के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. हरि प्रकाश यादव जिला विद्यालय निरीक्षक से मुलाकात कर समस्या के निस्तारण की मांग की। सोमवार को प्रदेश उपाध्यक्ष एवं प्रदेश प्रवक्ता उपेंद्र वर्मा के नेतृत्व में शिक्षकों का प्रतिनिधिमंडल जिला विद्यालय निरीक्षक प्रयागराज से मुलाकात कर मांग की कि चयन बोर्ड से चयनित शिक्षकों को तत्काल आवंटित कॉलेजों में कार्यभार ग्रहण कराया जाए। जिससे चयनित शिक्षक अपना योगदान विद्यालयों में दे सकें और शासनादेश के विपरीत कार्य करने वाले कालेजों के ऊपर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। जिससे भविष्य में इस तरह की अनियमितता ना होने पाए। इस दौरान चयन बोर्ड द्वारा चयनित शिक्षकों की विद्यालयों में नियुक्ति ना मिलने पर नाराजगी व्यक्त की गई।

प्रतिनिधिमंडल में मण्डल अध्यक्ष सुधीर गुप्ता, सुरेन्द्र प्रताप सिंह, जिला संयोजक अशोक कनौजिया, जिला महामंत्री कमल सिंह, संगठन मंत्री आशीष मोदनवाल, संरक्षक विनोद सिंह, हरिशंकर, सुधाकर ज्ञानार्थी, नीलम सिंह, अरुण कुमार, पुष्प लता सिंह, नरेंद्र बहादुर सिंह, मिथिलेश मौर्या, जितेंद्र कुमार, राकेश यादव, अंजुला दास, अंजना सिंह, गिरीश तिवारी, डॉ.बृजेश यादव समेत सैकड़ों पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

धूमधाम से मनायी गयी भगवान श्री कृष्ण की छठी

प्रयागराज। कटघर स्थित समिया माई मन्दिर में भगवान श्री कृष्ण को छप्पन भोग लगाकर उनकी छठी मनाई गई। मंदिर में भगवान कृष्ण के छठी के पावन अवसर पर भगवान का विधिवत श्रृंगार एवं पूजा अर्चना की गई तथा मंदिर को भी गुब्बारे तथा रंग बिरंगी लरियों से सजाया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ भगवान श्रीकृष्ण के भजन कीर्तन से हुआ। भगवान को भोग लगाने के बाद सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर भाजपा पार्षद पवन श्रीवास्तव ने कहा कि भगवान कृष्ण ने अपने जीवन को जिस तरह से प्रेम, पराक्रम और कुशलता के साथ जिए उसकी अभी तक लोग मिसाल देते हैं। उन्होंने बचपन में ही अपने अन्यायी मामा कंस का वध किया और फिर अपनी बुद्धिमत्ता और रणनीति कौशल से पांडवों को विजय दिलाई। किसी में सीखने की ललक हो तो वह भगवान कृष्ण के जीवन से बहुत कुछ सीख सकता है। भगवान श्रीकृष्ण का पूरा जीवन विभिन्न दुर्लभ प्रसंगों से भरा हुआ है।

भगवानी श्री कृष्ण की छठी मनाते भक्तगण

हर बार वह नए भाव, नई कला और विधि व चमत्कार से समय को अपने पक्ष में कर लेते थे। इस अवसर पर योगी सत्यम, पार्षद रुचि गुप्ता, पूर्व पार्षद नीरज गुप्ता, पूर्व पार्षद कन्हैया लाल गुप्ता, विहिप नेता विनोद सोनकर, विनीत गुप्ता, निखिल केसरवानी, राजू माली, निधि केसरवानी, प्रेमलता केसरवानी, शिवानी वॅशिका, माही, मुस्कान, महक, राधा मिश्रा, अंकित सोनकर, अभिषेक सिंह, मनीष द्विवेदी, अनिका, दिव्यश्री नवी एवं विवान आदि उपस्थित रहे।

दलित फरियादी को जूते से पिटाई के मामले में दरोगा की एसएसपी से शिकायत

घूरपुर। घूरपुर थाने के एक दरोगा द्वारा एक दलित फरियादी को जूते से पिटाई व जाति सूचक गालिया देने के मामले को लेकर सोमवार के दिन अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के प्रतिनिधियों ने एसएसपी अभिषेक दीक्षित से मुलाकात कर शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की जिस पर एसएसपी ने जांच कर कार्रवाई का आश्वासन दिया है। किसान सभा कार्रवाई नही किए जाने बड़े आंदोलन की चेतावनी दी है।

बता दें कि शनिवार के दिन घूरपुर निवासी एक दलित जमीनी विवाद को लेकर थाने में शिकायत करने पहुंचा तो आरोप है कि मौजूद एक दरोगा ने जाति सूचक गालिया देते हुए जूते से जमकर पिटाई कर लाकप में बंद कर दिया। इतना ही नही अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के एक पदाधिकारी मामले को जानने के लिए पहुंचा तो उसके साथ भी दरोगा ने अभद्रता किया। मामले की जानकारी अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के पदाधिकारियों को हुई तो उक्त दरोगा से बात करने पहुंचे तो दरोगा ने एक नही सुनी। पदाधिकारियों ने पूरे मामले को सीओ करछना को फोन के माध्यम से अवगत कराया तब जाकर दलित फरियादी को लाकअप से बाहर निकाला छोड़ा। आरोप है कि शोरेपुस्त विपक्षी से मिलीभगत के चलते दरोगा ने ऐसा कुकृत्य किया और धमकी दिया कि विपक्षी के खिलाफ काम किया तो फर्जी मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दूंगा। दुकान छोडकर भाग जाओ।मामले को सभा के पदाधिकारियों ने रविवार को सीओ कार्यालय पहुंच उक्त आरोप लगाते हुए दरोगा के खिलाफ शिकायती पत्र देकर एफआईआर दर्ज कर जेल भेजे जाने की कार्रवाई की मांग थी। कोई कार्रवाई ना होते देख किसान सभा के पांच सदस्यीय प्रतिनिधि सुरेश निषाद,राजकुमार पथिक, करन निषाद,कमलेश निषाद,साहेब लाल निषाद, छोटेलाल पीड़ित को लेकर सोमवार के दिन एसएसपी से मुलाकात कर शिकायती पत्र देकर आरोपित दरोगा के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। एसएसपी ने जांच कर कार्रवाई किए जाने का आश्वासन दिए है। मामले को लेकर संगठन में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। मामले को लेकर एस एससी एसटी आयोग के पास भी शिकायती पत्र भेजा गया है। और खिलाफ में आंदोलन किए जाने की भी गुप्त तैयारिया भी संगठन ने शुरू कर दिया है।

एसएसपी को शिकायती पत्र देने पहुंचे अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के लोग

दोनों पारियों में सफल रहे चेतन चौहानः सांसद केशरी देवी

प्रयागराज। चेतन चैहान एक सफल व्यक्ति थे, जो जीवन की दोनों पारियों में सफल रहे। वह जब क्रिकेट खेलते रहे उन्होंने उस माध्यम से देश को शिखर पर ले जाने का कार्य किया और जब राजनीति में आए तो अपने उत्कृष्ट कार्यों के बल पर देश-प्रदेश और समाज को एक नई दिशा दी। उक्त विचार सोमवार को फूलपुर सांसद श्रीमती केशरी देवी पटेल ने शोक सभा के दौरान व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वैश्विक महामारी कोरोना वायरस की चपेट में आने से उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री चेतन चैहान की असामयिक मृत्यु रविवार को हुई। इस अवसर पर उन्होंने दो मिनट का मौन रखकर ईश्वर से उनकी आत्मा को अपने चरणों में स्थान देने तथा शोक संतप्त परिवार को उक्त घटना सहने की क्षमता प्रदान करने का आग्रह किया। इस दौरान पूर्व विधायक दीपक पटेल, पूर्व विधायक गुरु प्रसाद मौर्या, मीडिया प्रभारी पार्षद पवन श्रीवास्तव, अरुण अग्रवाल, दिलीप श्रीवास्तव, चंद्रिका पटेल, विजय पटेल, मंगलेश्वर एवं भूपेंद्र पांडेय उपस्थित रहे।

बार काउन्सिल ने अधिवक्ता के खिलाफ झूठी शिकायत खारिज की

प्रयागराज। उ.प्र बार काउन्सिल की अनुशासनिक समिति ने एक अधिवक्ता के खिलाफ की गयी शिकायत को झूठा मानते हुए खारिज कर दिया है। बार काउन्सिल ने अधिवक्ता पंकज शर्मा के खिलाफ अपुष्ट साक्ष्यों के साथ की गई शिकायत बलहीन करार देते हुए निरस्त कर दिया है। मुजफ्फरनगर के शिवचैक कुमार सिंहल ने पंकज शर्मा के खिलाफ बार काउन्सिल में शिकायत की थी कि मधुरानी गर्ग का हाईकोर्ट में याचिका दायर करने के लिए उन्होंने 24 अक्तूबर 2017 को 40 हजार रुपए लिए और मुकदमा दाखिल नहीं किया तथा पैसा हड़प लिया है। इस शिकायत का अधिवक्ता ने खंडन किया था। अधिवक्ता पंकज ने अपने जवाब में कहा था कि शिकायत कर्ता ने एक अन्य अधिवक्ता के मार्फत 21 अक्तूबर 2017 को ही याचिका दाखिल कर ली है। इसकी जानकारी होने के बाद भी वह अधिवक्ता पर झूठा आरोप लगा रहा है। शिकायत कर्ता सिंहल को बार बार नोटिस दी गयी, किन्तु उन्होंने जवाब नहीं दिया। बार काउन्सिल ने कहा कि शिकायतकर्ता ने आरोपों की सत्यता का कोई साक्ष्य नहीं दिया। जिसके आधार पर शिकायत खारिज कर दी गयी है।

अमिलो के राघवेन्द्र ठकुरिया को सम्मानित किये जानें पर लोगों में हर्ष

करमा । करछना क्षेत्र के अमिलो निवासी राघवेन्द्र ठकुरिया को यमुनापार विकास समिति नामक सामाजिक संस्था की ओर से सम्मानित किये जानें पर क्षेत्र के युवाओं सहित महिलाओं एवम ग्रामीणों में हर्ष व्याप्त हैं । श्री ठकुरिया कौंधियारा विकास खण्ड के एक प्राथमिक विद्यालय में सहायक अध्यापक हैं । श्री ठकुरिया के दिशा निर्देशन में अनेकों छात्र /छात्राएं प्रेरणा लेकर समाज के विकास में अपना योगदान दें रहें हैं ।श्री ठकुरिया प्रत्येक त्योहारों एवम सामाजिक आयोजनों में युवाओं के प्रोत्साहन हेतु आर्थिक सहयोग भी प्रदान करतें हैं।

समाज सेवियों ने मनाया स्वतंत्रता दिवस

करछना। संगम समाज सेवा समित व अमन सेवा समिति व मदर टेरेसा फाउंडेशन के तत्वाधान में डॉक्टर गुलाम मुस्तफा व डॉक्टर हूर फातमा के अध्यक्षता में झंडारोहण करके 15 अगस्त मनाया गया इस मौके पर डॉक्टर गुलाम मुस्तफा ने कहा की आज उन लोगों को याद करने का दिन है जिन्होंने देश के आजाद कराने में अपनी जान की आहुति दी है आजादी हमें यूं ही नहीं मिली आजादी की बहुत सी लड़ाइयां लड़ी गई बहुत सी कुर्बानियां दी गई सभी धर्मों के लोगों ने मिलकर अंग्रेजों से देश को आजाद कराया आज हम लोग आजाद हैं हमारे पूर्वजों ने कुबार्नी देकर आजादी दिलाई आज उन वीर जवानों को याद करने का दिन जिनकी बदौलत हम लोग अपने देश मेंअपने घरों में सुरक्षित रहते हैं और वीर जवान देश के बॉर्डर पर अपनी जान की बाजी लगाकर हमारे देश की और हम सब की रक्षा करते हैं इस मौके पर मोहम्मद अकरम उर्फ चांद डॉक्टर अफजल, मोहम्मद सुल्तान, शहजाद उल हक, मोहम्मद अजमल एडवोकेट, नवाब महबूब सुरूर फातिमा, हूर फातिमा, डा लालमिया मोहम्मद नोमान, डॉ डीके झा, अखिलेश यादव आदि रहे।

सैकड़ों युवाओं नें तिरंगा लहराकर मनाया जश्न

करमा । क्षेत्र के पूरे खगन स्थित बगिया ग्राउंड पर सैकड़ो युवाओं नें मिलकर आजादी के जश्न में सराबोर हुए । करमा बाजार से महज 05किमी स्थित बगिया ग्राउंड में आसपास के गाँवों के युवा प्रतिदिन आकर व्यायाम एवम विभिन्न परीक्षाओं में सफल होनें के लिए दौड़ की प्रैक्टिस करतें हैं । स्वतंत्रता दिवस पर कार्यक्रम संयोजक के अजय सिंह पटेल के मुताबिक विभिन्न गाँवों से लगभग 50लोग सम्मिलित हुए । कार्यक्रम में वरिष्ठ समाजसेवी एवम मीडिया प्रभारी भा.ज.पा. जसरा मंडल राजन प्रताप सिंह भी सम्मिलित होकर युवाओं में बिस्किट आदि वितरित किये ।

जश्न मनाते युवा

लगातार बढ़ रहा यमुना का जल स्तर तराई इलाके के गांवो में हड़कंप

घूरपुर। चार दिन पूर्व से लगातार तेजी से बढ़ रही यमुना के जल स्तर को देख घूरपुर इलाके के तराई क्षेत्र के गांवो में हड़कंप है। वहीं यमुना के तराई में उगाई गई सैकड़ो बीघे सब्जी की फसलें जल मग्न हो गई है। जिससे सब्जी के खेतिहर किसानों को भारी क्षति हुई है।

इस वर्ष यमुना नदी का जल स्तर देर से बढ़ा इसके पूर्व लोग बेफिक्र थे।इसी को देख लोग यमुना की तराई में बड़े पैमाने पर पूर्व की भांति सब्जी की खेती किए थे।विगत चार दिनों पूर्व से तीव्र गति से बढ़ रही यमुना का जल स्तर को देख तराई इलाके के बसवार, अमिलिया, पालपुर, इरादतगंज, सारीपुर, बीकर, मोहनीका पूरा, कंजासा, कैनुआ, बिरवल, आदि तराई इलाकों में हड़कंप हो गया है।यमुना का तेज गति से बढ़ता जल स्तर देख लोग पूर्व की बाढ़ से आशंकित हो विचलित है। इसी तरह तराई इलाके में उगाई गई सैकड़ो बीघे सब्जी की खेती परवल, भिंडी, कद्दू, लौकी, ननुआ, वैगन आदि की खेती डूब गई है। जिससे सब्जी की खेतिहर किसानों की क्षति हो रही है।

यमुना की धारा में स्थित सुजावन देव मंदिर की इन दिनों रौनक बढ़ गई है। गर्मी के दिनों में सुजावन देव मंदिर की यमुना की धारा सुख जाती है। इन दिनों यमुना का जल स्तर बढ़ने से मंदिर चारों तरफ पानी से घिर गया है। जिससे मंदिर की रौनक बढ़ गई है। मंदिर के पुजारी ज्ञान गोस्वामी जी बताते है कि यमुना की इन दिनों क्षेत्र सहित दूर दराज और शहर के भारी संख्या में लोग सुजावन देव मंदिर देखने को देखने आते है। कुछ लोग नांव पर बैठकर मंदिर में स्थित भगवान शिव की पूजा अर्चना करते है।और लोग यमुना बाढ़ का लुत्फ उठाते है। यमुना धारा में स्थित बड़े बड़े चट्टानों पथ्थरो से पानी टकराने की गड़गड़ाहट और पानी का उफान देखने लायक है। जो लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

यमुना बाढ़ के पानी से घिरा सुजावन देव मंदिर

बाहुबली विधायक केंद्रीय कारागार नैनी से चित्रकूट जेल भेजे गए

नैनी। भदोही जिले के विधायक विजय मिश्रा बाहुबली विधायक के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज होने के बाद संबंधित थानें की पुलिस उनकी तलाश में ताबड़तोड़ दबिश देती रही और वह पुलिस को चकमा देकर फरार हो गए। कुछ दिनों के बाद वह मध्य प्रदेश से गिरफ्तार किए गए। संबंधित पुलिस वहां पर पहुंची और बाहुबली विधायक को गिरफ्तार कर भदोही पहुंची। जहां कानूनी कार्रवाई पूरी होने के बाद ज्ञानपुर जिले में दाखिल किया गया, उसके बाद उन्हें केंद्रीय कारागार नैनी जेल में दाखिल कर दिया गया। सोमवार शाम को आनन-फानन में शासन के निर्देश पर बाहुबली विधायक विजय मिश्रा को जिला पुलिस के हवाले कर दिया गया और उन्हें चित्रकूट स्थित कारागार जेल स्थानांतरित के लिए भेजा गया। बता दें कि बाहुबली विधायक के खिलाफ दर्जनों आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं और कई बार वह सलाखों के पीछे जा चुके हैं।

क्रियायोग सन्देश

प्रयागराज रविवार, 18 अगस्त, 2020

भारत राष्ट्र के निर्माण से विश्व में सुख-शांति की स्थापना सुनिश्चित

भारत पूरे विश्व की आध्यात्मिक माँ है। जब तक भारत माँ की सम्पूर्ण समस्याएँ नहीं दूर होगी तब तक विश्व में स्थायी सुख-शांति की स्थापना कङ्गिन है। इतिहास पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि भारत देश में जिसको शरण नहीं मिली उसको विश्व में कहीं भी शरण नहीं मिली। एलैग्जैंडर जो विश्व में विजय का पताका फहरा रहा था, जब भारत से हारा तो सदैव के लिए पराजित हो गया। अंग्रेजों का सूर्य जब भारत में अस्त हुआ उसके बाद अंग्रजों का शासन अन्य सभी देशों से हट गया।

भारत से आतंकवाद, सम्प्रदायवाद तथा समस्त सामाजिक कुरूपताएँ समाप्त होने पर पूरी दुनिया से सारी कुरीतियाँ समाप्त हो जाएँगी। भारत राष्ट्र में शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति, व्यापार नीति, आदि की समस्त कुरूपताओं को समाप्त करने के लिए आध्यात्मिक पर्यावरण का ङ्कीक होना आवश्यक है। आध्यात्मिक जगत में अनेक प्रकार के गलत सिद्धान्त फैले हुए हैं। उदाहरण के लिए – लोग कहते हैं कि मनुष्य को कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। उसे सब कुछ सद्गुरु, परमात्मा की कृपा से प्राप्त हो जाएगा। 'कृपा' का अर्थ बिना कुछ करे सब कुछ प्राप्त करने से लगाया जाता है। यह सिद्धान्त गलत है।

'कृपा' के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए 'कृपा' शब्द पर ध्यान दें। 'कृपा' शब्द 'कृ' धातु से बना है। 'कृ' का अर्थ करने से है तथा 'पा' 'प' और 'अ' के संयोग के बना है। 'प' का अर्थ प्राप्त करने से है तथा 'अ' का अभिप्राय ब्रह्मा, विष्णु व शिव में विद्यमान शक्ति व ज्ञान से है। कृपा शब्द में छिपे सत्य को पा लेने पर यह स्पष्ट है कि कृपा का अभिप्राय उस कर्म के करने से है जिससे अपने अंदर सुषुप्त ब्रह्मा, विष्णु व शिव का ज्ञान व शक्ति प्रकट हो सके। हर चीज़ कृपा से प्राप्त होती है, इसका वास्तविक अर्थ यह है कि मनुष्य जो कुछ कर्म करता है, उसी के अनुसार उसे हर चीज़ प्राप्त होगी।

आज आवश्यकता है आध्यात्मिक विषय को हम पूर्ण विज्ञान के रूप में समझें और तद्अनुरुप अभ्यास करें। क्रियायोग विज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान है और इसका अभ्यास क्रियायोग ध्यान है।

क्रियायोग ध्यान को समझ लेने पर स्पष्ट होता है कि तप, ध्यान, साधना, सुमिरन, भक्ति, आदि भिन्न भिन्न साधनाओं की व्याख्या गलत की जाती है। क्रियायोग का जैसे-जैसे विस्तार होगा मनुष्य बीमारी, चिन्ता, अज्ञानता और सम्पूर्ण कष्टों से सहजता से मुक्त हो जाएगा। इसके साथ ही साथ आध्यात्मिक जगत में फैली हुई विषमताओं का समापन होगा। आध्यात्मिक कुरूपता के समाप्त होने पर समाज के सभी अंग - शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति व्यापार नीति आदि इस प्रकार ङ्कीक हो जाएंगे कि उनके द्वारा मानवता की सच्ची सेवा होगी और विश्व का कल्याण होगा।

Secured Peace & Joy of All Countries Resides In Indian Heritage

As understood during class sessions by Guruji Swami Shree Yogi Satyam, Kriyayoga Master & Scientist

Lifestyle of Indian Heritage is teaching of all prophets of all ages and lands. It gives the message that the aim of each and every person is to realize ultimate Truth and that there exists only Immortal Consciousness. It was taught in various ways in different ages. Now Science has proved Truth behind this teaching. By observing the nature of water substance, it is realized that the external form of water can be changed from solid to liquid to gas. Visible water, through hydrolysis, is transformed into invisible hydrogen and oxygen. The reversal is also possible i.e., hydrogen and oxygen can be synthesized to get water again. Thus, water cannot be destroyed by anyone through any means.

This is true for all creations of Cosmos. Indian Heritage is education which brings realization of the same Truth. It is revealed that through the practice of Kriyayoga Meditation, one can experience Oneness with Consciousness of Indian Heritage. Indian Heritage was known as Cosmic-consciousness in the period of highest evolved human civilization around the period of 11,500 B.C. Cosmic-consciousness means the whole Cosmos is conscious (fully alive). There is no existence of any mortal creation. It clearly explains that there is no dead particle in the Cosmos. Full knowledge of this is known as oneness with complete education. In ancient times, aim of education was the same that each and every person should realize the ultimate Truth that each and every creation of Cosmos is fully conscious and is working in its unique style, guided by Omnipotent, Omniscient Consciousness.

The whole Cosmos is a wonderful Cosmic movie, created by God, which demonstrates duality in walks of life. Every twelve thousand years brings a complete change both externally in the material world and internally in the intellectual world. In a period of twelve thousand years, the understanding of man rises to a highest and decreases to a minimum.

From 11,500 B.C., the intellectual power of man began to diminish. Because of this, intensity of perception of Truth started declining. The period of around 500 A.D. was the darkest period and intellectual power of man was so diminished that it could no longer comprehend beyond the gross material of creation. At this time, the concept of Indian heritage was observed in a limited geographical area well-known as India.

Indian Heritage does not mean that something is related to India alone. Actually, Indian Heritage refers to the principles and philosophies of Cosmic-consciousness.

Any country, when charged with the principles and philosophy of Indian Heritage, will be honoured as Mother India by all countries of the world and will be free from all terrorism and multi-dimensional poverty. Mother India will serve all countries of the world by providing all things which will bring the realization that the whole world is One Home (Vasudhaivakutumbakam) and all persons belonging to the Home are children of God.